सप्तमः पाठः

सुभाषितानि

1. सर्वा विद्याः पुरा प्रोक्ताः संस्कृते हि महर्षिभिः।
तद्विद्यानिधये सेव्यं संस्कृतं कामधेनुवत्।।

अर्थः– महर्षियों ने पूर्वकाल से ही संस्कृत भाषा में समस्त विद्याओं की रचना कर दी है। किन्तु उन विद्यारूपी खजानों को पाने के लिए कामधेनु के समान संस्कृत भाषा की सेवा आवश्यक है।

2. वायूनां शोधकाः वृक्षाः रोगाणामपहारकाः।
तस्माद् रोपणमेतेषां रक्षणं च हितावहम्।।

अर्थः– वृक्ष वायु को शुद्ध करते हैं और रोगों को दूर भगाने में सहयोगी होते हैं। इसलिए वृक्षों का रोपण और रक्षण प्राणीमात्र के लिए हितकारी है।

3. त्वक्शाखापत्रमूलैश्च पुष्पफलरसादिभिः।
प्रत्यङ्गैरुपकुर्वन्ति वृक्षाः सद्भिः समं सदा।।

अर्थः– सन्तों के समान ही वृक्ष अपनी त्वचा शाखा पत्ते मूल, पुष्प फल रस आदि सभी अंगों से प्राणियों का उपकार करते है।

4. केषाञ्चिदपि वस्तूनां गम्यते सङ्गिना गुणः।
वैद्यनापितहन्तृणां हस्तेषु क्षुरिका यथा।।

अर्थः– किसी भी वस्तु का गुण उसके संगवाले से समझा जाता है अर्थात् वस्तु के धारणकर्त्ता पर निर्भर करता है। जैसे छुरी का गुण उपयोग वैद्य,नाई और हत्यारे के हाथ में देखकर ही पता चलता है।

5. यच्छक्यं ग्रसितुं शस्तं ग्रस्तं परिणमेच्च यत्।
हितं च परिणामे यत्तदाद्यं भूतिमिच्छता।।

अर्थः– जो वस्तु खाई जा सके और खाने पर भली–भाँति पच सके और पच जाने पर हितकारक हो ऐश्वर्य की इच्छा करने वाले व्यक्ति को वही वस्तु खानी चाहिए।

6. अनन्तपारं किल शब्दशास्त्रं स्वल्पं तथायुर्बहवश्च विध्नाः।
सारन्ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु हंसैर्यथा क्षीरमिवाऽम्बुमध्यात्।।

अर्थः– शास्त्र का पार कहीं निश्चित नहीं है और मनुष्य की आयु कम है इसलिए सार ग्रहण कर सार हीन को उसी प्रकार छोड़ देना चाहिए, जिस प्रकार हंस जल से दूध ग्रहण कर लेते हैं और जल छोड़ देते हैं।

7. शस्त्रहता न हि हता रिपवो भवन्ति, प्रज्ञाहतास्तुरिपवः सुहता भवन्ति।
शस्त्रं निहन्ति पुरुषस्य शरीरमेकं प्रज्ञा कुलञ्च विभवञ्च यशश्च हन्ति।।

अर्थः– शस्त्रों से मारे गये शत्रु नहीं मरते परन्तु बुद्धि से मारे गये शस्त्रु वास्तव में मारे जाते हैं। शस्त्र से तो शत्रु का मरकर मात्र शरीर ही नष्ट किया जा सकता है परन्तु बुद्धि से उसका वंश कुल, वैभव और यश आदि सब कुछ नष्ट हो जाता है।

8. दिनान्ते पिबेत् दुग्धम्, निशान्ते च पिबेत् पयः।
भोजनान्ते पिबेत् तक्रम् किं वैद्यस्य प्रयोजनम्।।

अर्थः– दिवस के अंत (शाम) में दूध पीना चाहिए, रात्रि के अंत में (सुबह) जल पीना चाहिए, भोजन के अंत में छाछ पीनी चाहिए। ऐसा करने से वैद्य की आवश्यकता नहीं है।

9. आचार्यात्पादमादत्ते पादं शिष्यः स्वमेधया।
कालेन पादमादत्ते पादं सब्रह्मचारिभिः।।

अर्थः– शिष्य अपने जीवन का एक भाग अपने आचार्य से सीखता है, एक भाग अपनी बुद्धि से सीखता है एक भाग समय से सीखता है तथा एक भाग वह अपने सहपाठियों से सीखता है।

10. नास्ति विद्यासमं चक्षुः नास्ति सत्यसमं तपः।
नास्ति रागसमं दुःखं नास्ति त्यागसमं सुखम्।।

अर्थः– विद्या के समान आँख नहीं है, सत्य के समान तप नहीं है, राग के समान दुःख नहीं है, और त्याग के समान कोई सुख नहीं है।

शब्दार्थाः

पुरा प्रोक्ताः	=	पहले कही गयी। (पुरा–अव्यय शब्द)
महर्षिभिः	=	महान् ऋषियों के द्वारा (महर्षिभिः–महर्षि इकारान्त पु. शब्द तृ.ब.व)
निधये	=	खजाने के लिए (निधि – इकारान्त पु. चतुर्थी एकवचन)
सेव्यम्	=	सेवा करने योग्य
शोधकाः	=	शुद्ध करने वाले हैं। (शोधक – प्रथमः बहुवचन)
अपहारकाः	=	दूर भगाने वाले हैं
हितावहम्	=	हितकारी
त्वक्	=	त्वचा छाल
प्रत्यङ्गैः	=	सम्पूर्ण अङ्गों से (प्रति + अङ्ग = तृ.ब.व)
सद्भिः	=	सज्जनों से (सद् – तृ.ब.व)
सङ्गिना	=	संग वाले से (सङ्गिन् – तृ. एकवचन)
गम्यते	=	समझा जाता है। (गम् (कर्मणि) – आत्मनेपद प्र.पु. एकवचन)
वैद्यः	=	चिकित्सक (पु. प्र. एकवचन)
नापितः	=	नाई (पु. प्र. एकवचन)
हन्तृणाम्	=	हत्यारों के (हन्+तृच्=हन्तृ षष्ठी ब.व.)
हस्तेषु	=	हाथों में (हस्त शब्द पु. सप्तमी ब.व.)
शस्त्रहताः	=	शस्त्रों से मारे गए। (शस्त्रहताः = शस्त्र + हन् + क्त ब.व.)
प्रज्ञाहताः	=	बुद्धि से मारे गए। (प्रज्ञाहताः = प्र + ज्ञा + हन् + क्त ब.व.)
सुहताः	=	भली प्रकार मारे जाते हैं। (सुहताः = सु + हन् + क्त ब.व.)
दिनान्ते	=	दिन के अंत में (शाम) (दिन + अन्ते =दिनान्ते दीर्घ स्वर संधि)
पयः	=	जल
प्रयोजनम्	=	आशय, उद्देश्य

पादम्	=	चतुर्थ भाग
स्वमेधया	=	अपनी बुद्धि से (स्वमेधा – तृतीया एकवचन स्त्रीलिङ्ग)
सब्रह्मचारिभिः	=	अपने सहपाठियों के साथ। (सब्रह्मचारिन् – तृतीया ब.व.पु.)
रागसमम्	=	लोलुपता के समान

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–

   (क) संस्कृतं कीदृशम् अस्ति?

   (ख) संस्कृतमहर्षिभिः किं प्रोक्तम्?

   (ग) वृक्षाः केषां शोधकाः?

   (घ) के रोगाणाम् अपहारकाः?

   (ङ) वृक्षाः प्राणिनां कथं उपकुर्वन्ति?

2. रेखाङ्कित–पदानि आधृत्य संधिविच्छेदं कुरुत –

   (क) महर्षिभिः सर्वाविद्याः प्रोक्ताः।

   (ख) तथायुर्बहवश्च विध्नाः।

   (ग) पयः निशान्ते पिबेत्।

   (घ) शस्तं ग्रसितुं यच्छक्यम्।

3. एषु शब्देषु को भिन्नः

   (क) संस्कृते, गम्यते, क्रियते, दृश्यते।

   (ख) क्रीडति, धावति, पिबति, ददति।

   (ग) पठन्ति, चलन्ति, धावन्ती, हसन्ति।

   (घ) वर्धमान, वर्तमान,सेवमान,शक्तिमान।

4. अधोलिखितं श्लोकं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–

आचार्यत्पादमादते पादं शिष्यः स्वमेधया।

कालेन पादमादत्ते पादं सब्रह्मचारिभिः।।

1. कस्मात् पादम् आदत्ते?
2. कः ब्रह्मचारिभिः पादम् आदत्ते?
3. बुद्ध्या' इति पदाय श्लोके कः शब्दः प्रयुक्तः?
4. दत्ते इति पदस्य किं विलोमपदं प्रयुक्तम्?
5. चतुर्थांशः इत्यर्थं कः शब्दः प्रयुक्तः?
6. शिष्य इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किम्?

5. रिक्तस्थानानि पूरयत –

(क) स्वल्पं तथा .....बहवश्च विघ्नाः।

(ख) दिनान्ते च दुग्धं .....।

(ग) .....सुखं न अस्ति।

(घ) केषाञ्चिदपि .....गम्यते।

(ङ.) वृक्षाः .....शोधकाः।

————000———

R2KPT5